Q. सार्वजनिक और निजी प्रशासन के बीच अंतर पर चर्चा करें

प्रशासन सामाजिक संगठन, संस्थानों या सरकार की कार्यप्रणाली को नियंत्रित, समन्वित और सुचारू रूप से चलाने की प्रक्रिया है। प्रशासन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं — सार्वजनिक (Public Administration) और निजी (Private Administration)। इन दोनों के कार्य, उद्देश्य, दृष्टिकोण, संगठन एवं महत्व में कई मौलिक अंतर हैं, जिन्हें समझना प्रशासन शास्त्र के लिए आवश्यक है।

सार्वजनिक प्रशासन

सार्वजनिक प्रशासन से अभिप्राय है — राज्य/सरकार के तंत्र द्वारा जनता के हित में चलाए जाने वाले कार्यों तथा नीतियों का क्रियान्वयन। भारत में यह मुख्यतः मंत्रालय, विभाग, स्थानीय निकाय, सार्वजनिक उपक्रम आदि के माध्यम से होता है। इसमें सरकारी सेवक, अफसर, कर्मचारी जनता के लिए कार्य करते हैं, उदाहरण के लिए — प्रशासनिक अधिकारी द्वारा सामाजिक कल्याण योजनाओं का संचालन, जिलाधिकारी द्वारा आपदा राहत, पुलिस द्वारा कानून-व्यवस्था बनाए रखना आदि।

मुख्य विशेषताएँ:

- जनता के हित एवं कल्याण पर केंद्रित काम।
- पारदर्शिता, जवाबदेही एवं उत्तरदायित्व।
- कानून, नियम और नीति-निर्देश आधारित।
- राजनीतिक-दबाव एवं जवाबदेही।
- सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में योगदान।

निजी प्रशासन

निजी प्रशासन से अभिप्राय है — निजी संस्थान, कंपनियां अथवा गैर-सरकारी संगठनों का संचालन व प्रबंधन। इसका उद्देश्य लाभ कमाना, दक्षता, प्रतिस्पर्धा और संस्थागत व्यवस्था को दुरुस्त करना है। निजी संस्थानों में मालिक, प्रबंधक, कर्मचारी व बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए — टाटा कंपनी में मानव संसाधन प्रबंधन, बैंक के निजी शाखा का संचालन, सोसाइटी अथवा ट्रस्ट का प्रशासन।

मुख्य विशेषताएँ:

- व्यक्तिगत/संस्थागत हित व लाभ केंद्र।
- न्यूनतम सार्वजनिक जवाबदेही।
- लचीला संगठनात्मक ढांचा।
- नवाचार एवं कार्य-प्रदर्शन पर बल।
- नीति/व्यवस्था अपने उद्देश्यों के अनुसार लचीली।

सार्वजनिक और निजी प्रशासन में मुख्य अंतर

बिंदु	सार्वजनिक प्रशासन	निजी प्रशासन
उद्देश्य	जनता का कल्याण, समाजहित	लाभ, निजी हित
जवाबदेही	राजनीतिक, समाज और जनसामान्य के प्रति	मालिक/बोर्ड के प्रति
नियम/नियमन	सख्त नियम, विधिक प्रक्रिया	लचीला, संस्थागत नीति
पारदर्शिता	अधिक, सूचना का अधिकार कानून, जनता की निगरानी	सीमित, आंतरिक पारदर्शिता
भर्ती/सेवा	योग्यता आधारित भर्ती, स्थायित्व	संस्थान-नीति आधारित, छंटनी/नियुक्ति में लचीलापन
कार्यक्षेत्र	सामाजिक विकास, कल्याणकारी योजनाएँ	निवेश, उत्पादन, विपणन आदि
उदाहरण	जिलाधिकारी, पुलिस, सरकारी शिक्षक	कंपनी प्रबंधक, निजी बैंक अधिकारी

उदाहरण

1. **सार्वजनिक प्रशासन के उदाहरण:**
    - **भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS):** जिले में सरकारी योजनाएँ लागू करना, कानून और व्यवस्था बनाए रखना।

- **सरकारी अस्पताल:** समाज को चिकित्सीय सुविधा प्रदान करना, टीकाकरण अभियान।
- **शिक्षा विभाग:** सरकार द्वारा मुफ्त शिक्षा वितरण।

2. **निजी प्रशासन के उदाहरण:**
    - निजी कंपनी जैसे इंफोसिस या टाटा कंसल्टेंसी द्वारा उत्पाद/सेवा का उत्पादन/वितरण।
    - **निजी अस्पताल:** अधिक लाभ के लिए चिकित्सा सेवा, विशेष चिकित्सा सुविधाएँ।
    - **निजी स्कूल:** शुल्क आधारित शिक्षा, कॉर्पोरेट शैली का प्रबंधन।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

आज के भूमंडलीकृत दौर में सार्वजनिक प्रशासन को सामाजिक न्याय, डिजिटल गवर्नेंस, पारदर्शिता और जवाबदेही के दबाव का सामना करना पड़ता है। वहीं, निजी प्रशासन में प्रतिस्पर्धा, नवाचार और दक्षता की लगातार माँग होती है। कई बार दोनों क्षेत्रों के आदान-प्रदान से प्रशासन बेहतर बन सकता है — जैसे सरकारी हॉस्पिटल में निजी प्रबंधन की दक्षता को अपनाना या निजी कंपनियों में सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा लाना।

चुनौतियाँ और सुधार की आवश्यकता

सार्वजनिक प्रशासन में भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, देर से निर्णय जैसी समस्याएँ हैं। निजी प्रशासन में लाभ के लिए सामाजिक हितों की अनदेखी, श्रमिक हितों की उपेक्षा आदि खतरे बने हुए हैं। अतः दोनों क्षेत्रों में सुधार जरूरी है — उदाहरण हेतु ई-गवर्नेंस, CSR नीति, जनभागीदारी, सामाजिक ऑडिट जैसी पहलें आगे बढ़ रही हैं।

निष्कर्ष

सार्वजनिक और निजी प्रशासन दोनों समाज की आवश्यक इकाइयाँ हैं, जिनका उद्देश्य, कार्यशैली एवं जवाबदेही भिन्न हो सकती है, लेकिन मूल भावना संगठन में आर्थिक, सामाजिक और नैतिक संतुलन साधने की होती है। प्रशासन के दोनों रूप अपनी-अपनी ताकत व सीमाओं के साथ समाज के समग्र विकास में सहायक हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के दृष्टिकोण से इनका तुलनात्मक अध्ययन प्रशासन शास्त्र का मूल आधार है, जिससे नीति निर्धारण, क्रियान्वयन और सुधार के उपायों को समझा जा सकता है।